५ कला रसास्वाद – दृश्यकला

कला का सौंदर्य समझ लेते समय....

66Z7FP

उद्‌देश्य :

(१) मानव जीवन में कला का महत्त्व अपने शब्दों में बताना। अलग-अलग दृश्यकला के प्रकारों के नाम तथा इस कला के मूलभूत पाँच घटकों के नाम बताना।

(२) दैनिक जीवन में प्रयोग किए जाने वाले कला प्रकार पहचानना। कुछ प्रसिद्‌ध कलाकारों के नाम बता सकना।

(३) एक ही भावना अथवा प्रसंग हर कलाकार अपनी-अपनी शैली में अलग-अलग पद्‌धति से व्यक्त करता है, इस विधान का समर्थन कर सकना।

(४) कोई एक प्रयोग कलाविष्कार निर्माण कर स्वयं की अभिव्यक्ति करना।

(५) किसी कलाविष्कार में दृश्य कला के पाँच मूलभूत घटकों का किस प्रकार प्रयोग किया गया है इसका अपने शब्दों में वर्णन करना और कोई कलाविष्कार क्यों पसंद आया, इसका अपने शब्दों में स्पष्टीकरण कर सकना।

१. थोड़ा मजा करते हैं...

कोई देशभक्ति परक गीत कक्षा में ऊँची आवाज में सुनाया जाए। विद्‌यार्थी उसे सुनकर उसका आनंद उठाएंगे।

२. थोड़ा सोचेंगे :

क्या समुद्र के किनारे टहलते समय रेत का किला बनाना अथवा रेत पर कुछ लिखने का मन करता है? हाँ/नहीं

क्या किसी बात को सोचते समय अनजाने में आप कागज पर चित्र अथवा नक्काशी बनाते हैं? हाँ/नहीं

१. निम्नांकित मुद्‌दों पर चर्चा करें।

- गाना सुनते समय आपको नाचने का अथवा पैर से उसका ताल पकड़ने का मन करता है?
- क्या आपका शरीर संगीत पर थिरक रहा था?

२. विद्‌यार्थियों को हर एक प्रश्न पढ़कर बताइए। हाँ/ना या हाथ ऊपर करके बताने को कहें। प्रश्न की सारी कृतियाँ अपने आप हो गईं या सहजता से की गईं, इस बारे में सोचने के लिए कहें।

जब आप खुश होते हैं तब नाचने या गाना गुनगुनाने का मन करता है? हाँ/नहीं

किसी के बारे में बोलते समय उसकी नकल करने का मन करता है? हाँ/नहीं

किसी बात को रंजकता से बताने का मजा आपने उठाया है?हाँ/नहीं

ध्यान देने योग्य बातें :

सभी को व्यक्त होने की जरूरत होती है। स्वयं के विचार, मत, भाव-भावना प्रकट करने की मन से इच्छा होती है। अभिव्यक्ति साँस लेने जैसी ही महत्त्वपूर्ण होती है। कभी-कभी यह अभिव्यक्ति शब्दों के माध्यम से प्रकट होती है लेकिन बहुत बार मनुष्य को कला का आधार लेना पड़ता है। कला हर एक मनुष्य में सहजता से मौजूद होती है। हमें मनुष्य के अस्तित्व के प्रारंभिक काल से अलग-अलग प्रकार की कलाओं की निर्मिति करने का प्रयास दिखाई देता है। दुनिया की सभी संस्कृतिओं में कला का उत्कर्ष दिखाई देता है। अधिकतर लोगों को कला में रुचि होती है। लोग कला निर्माण करना, उसका अनुभव लेना अथवा उसके लिए आर्थिक सहायता करना आदि प्रकार से कला के साथ जुड़ जाते हैं।

३. कला अर्थात क्या ?

कला की अत्यंत आसान परिभाषा प्रख्यात चित्रकार श्री देवीप्रसाद जी ने की है, वह इस प्रकार है, ''जो कृति सौंदर्यपूर्ण और मनुष्य के लिए अर्थपूर्ण है, ऐसी कोई भी कृति कला है।'' अर्थात आप जो भी कुछ करें वह अगर सौंदर्यपूर्ण है, मनुष्य के लिए लाभदायक है तो वह कृति कला ही कहलाएगी। हम सभी एक प्रकार से कलाकार ही हैं । केवल स्वयं में मौजूद कला का और कलाकार का विकास जरूरी है।

४. दैनिक जीवन में छिपी हुई कला को पहचानना :

कला के बिना हमारा जीवन नीरस तथा ऊबने वाला होगा। कला के कारण जीवन सुंदर और आनंदमय होता है। अपना जीवन कला से घिरा हुआ है। रंगोली, फिल्म, कढ़ाई, कपड़ों की रंगसंगति, अलग-अलग केशरचना ऐसी अनेक कलाओं के उदाहरण हमें दिखाई देते हैं। व्यंग्यचित्र रोज के जीवन में दिखाई देने वाली कला है। जिस चित्र में कम-से-कम रेखाएँ, कल्पकता, विनोद बुद्धि होती है उसे व्यंग्यचित्र कहा जाता है।

कक्षा के विद्यार्थियों का गुट बनाएँ। उन्हें उनके दैनिक जीवन में दिखाई देने वाली कला ढूँढ़ने के लिए कहें। हर एक गुट कक्षा के सामने जानकारी प्रस्तुत करेगा। किसी विषय पर व्यंग्य चित्र बनाने के लिए कहें।

क्या आप दैनंदिन जीवन में कला से संबंधित कुछ और उदाहरण ढूँढ़ सकते हैं ?

५. कला प्रकारों की पहचान

संगीत, नृत्य, नाट्य, शिल्पकला, चित्रकला आदि कला निर्मिति के माध्यमों को 'कला प्रकार' कहा जाता है। प्राचीन भारत में चौसठ पारंपरिक कलागुणों में प्रवीण होना सुसंस्कृत होने की नींव मानी जाती थी। साधारण रुप में कला प्रकारों के सामान्यतः दो प्रकार होते हैं।

दृश्य कला :

दृश्य कलाओं में चित्रकला, शिल्पकला, ठप्पाकाम, कढ़ाई, बुनाई, छायाचित्रण(फोटोग्राफी), व्हिडियो निर्मिति, चित्रपट निर्मिति, साहित्य और वास्तु कला आदि का समावेश होता है।

प्रयोगजीवी कला :

इस प्रकार की कला में ऐसी कला का समावेश होता है जिसमें व्यक्ति अथवा व्यक्ति के समूह या गुट द्वारा दर्शकों के सामने कला प्रस्तुत की जाती है। इस प्रकार के प्रस्तुतीकरण में प्रत्यक्ष कलाकार की उपस्थिति आवश्यक होती है। उसमें नृत्य, संगीत, नाटक, नाट्यवाचन, मूकाभिनय,कठपुतली, सर्कस, काव्यवाचन, भाषण कला आदि का समावेश होता है। इस प्रकरण में हम दृश्य कला के बारे में अधिक जानकारी लेगें।

६. प्रकृति में विद्यमान कला का अनुभव :

विद्यार्थियों के गुट बनाइए। विद्यालय तथा घर के परिसर के वृक्ष, पौधे, फल आदि का निरीक्षण कीजिए। हर एक गुट संभव है उतने रंगों छटाओं की पत्तियाँ, फूल, फल, टहनियाँ, इकट्ठा करें। उसमें से एक जैसी रंग वाली चीजें पास-पास रखकर दिखाए गए चित्र के अनुसार एक रंगचक्र बनाए। एक-दूसरे का रंग देखने के लिए समय दें ।

चर्चा कीजिए :
कितने प्रकार की अलग-अलग रंग छटाएँ प्राप्त हुई हैं? क्या पत्तों के रंग और ऋतुओं का कुछ संबंध दिखाई दे रहा है? सभी पत्तों की गंध एक जैसी है? क्या पत्तों का स्पर्श, आकार और उसपर होने वाली नक्काशी समान है?

रंगचक्र

रंगसंगति : प्रकृति में जो रंग दिखाई देते हैं उसका प्रमुख कारण प्रकाश है। कला की दृष्टि से रंगों के बारे में जानकारी लेना महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

प्रथम श्रेणी के रंग : लाल, पीला, नीला, यह प्राथमिक श्रेणी के रंग हैं। इन्हें मूल रंग भी कहा जाता है क्योंकि वे किसी भी मिश्रण के बिना तैयार होते हैं।

द्वितीय श्रेणी के रंग : दो मूल रंगद्रव्यों के मिश्रण से तैयार होने वाले रंग, दुय्यम अथवा द्वितीय श्रेणी के रंग कहलाते हैं।

तृतीय श्रेणी के रंग : एक मूल रंग और अन्य दुय्यम रंग के मिश्रण से तृतीय श्रेणी का रंग तैयार होता है।

सभी रंग एक ही चित्र में इस्तेमाल करने से चित्र बिलकुल अच्छा नहीं दिखेगा। उसमे गड़बड़ी नजर आएगी। संगीत में अनेक राग हैं। उन रागों से विशिष्ट स्वर चुनकर प्रयोग करने से उसमें एकसूत्रता निर्माण होती है। चित्र बनाते समय भी ऐसे ही सुसंगत रंगों का चुनाव करने से चित्र आकर्षक लगेगा। कोई भी मूल रंग लेने पर उसके प्राथमिक रंग के घटक से तैयार होने वाला दुय्यम रंग, यह उसका संबंधित रंग है। उदा. हरा तथा नारंगी(केसरिया) यह पीले रंग के संबंधित है। नारंगी (केसरिया) जामुनी रंग यह लाल रंग के तथा हरा और जामुनी नीले रंग के संबंधित रंग हैं। इस रंगसंगति से सुसंवाद निर्माण होता है।

प्राकृतिक रंग तैयार करना ।

परिसर की अनेक सब्जियाँ, फल, फूल और पत्तों से रंग बनाया जा सकता है। उदा. चुकंदर में लाल रंग, पालक से हरा रंग, हल्दी से पीला रंग। आपके परिसर के प्राकृतिक चीजों से अधिक-से-अधिक रंग तैयार करें।

पत्थरों में अलग-अलग आकार देखने की समझ आना :

विद्यार्थियों को अपने आसपास से अलग-अलग आकार के पत्थर इकट्ठा करने को कहें। कल्पनाशक्ति का उपयोग करके उन पत्थरों का आकार कौन-सी वस्तु अथवा प्राणियों जैसा दिखता है, इसका विचार करें। सिर्फ वही आकार बाहर दिखाई देने तक पत्थर को रंग दें। इसके लिए किसी भी प्रकार के रंग का उपयोग कर सकते हैं ।

ध्यान देने योग्य बातें :

हजारों सालों से मानव प्रकृति के रंग, आकार, आवाज तथा बदलती ऋतुओं से प्रेरणा लेता आया है। हम जैसे -जैसे प्रकृति के निकट आते हैं, उससे नाता जोड़ते हैं वैसे-वैसे हमें प्रकृति के सौंदर्य की अनुभूति होती है और अपनी सौंदर्यदृष्टि विकसित होती है। यही सौंदर्यदृष्टि अपनी कला में भी प्रकट होती है। कला का उत्तम आविष्कार निर्माण करने के लिए सर्व प्रथम प्रकृति का निरीक्षण करना चाहिए।

७. थोड़ा कल्पक हो जाएँ :

हाथ-पैर के ठप्पे से बने चित्र

स्वयं के हाथ-पैर के ठप्पे का उपयोग करके किसी प्राणी, पंछी अथवा वस्तु का चित्र तैयार कीजिए। एक-दूसरे का चित्र समझ लीजिए।

शिल्पकला :

खड़िया, साबुन, रंगीन क्रेयान तथा कैंची, परकार का प्रयोग करके सुंदर नक्काशी करें। स्वयं की कल्पना से नक्काशी तैयार करें। मिट्‌टी से अलग-अलग प्रकार की वस्तुएँ, खिलौने, फल, बर्तन तैयार करना भी एक प्रकार की शिल्पकला ही है।

महीन नक्काशी :

जिस प्रकार खड़िया अथवा साबुन, क्रेयान पर महीन नक्काशी की, उसी प्रकार भारत के अलग-अलग प्रार्थना स्थलों पर महीन नक्काशी का काम किया हुआ दिखाई देता है । अधिकतर अपने इलाके के किसी महीन नक्काशी की हुई इमारत को भेंट देकर निरीक्षण करें ।

कोणार्क सूर्य मंदिर

जैन मंदिर

ताजमहल

स्वर्ण मंदिर, अमृतसर

चर्च

८.विविध दृश्य कला :

बच्चों के गुट बनाएँ। बताए गए कला प्रकारों के अनुसार विशिष्ट कला प्रकार चुनकर, उसके बारें में अधिक-से-अधिक जानकारी लें और कक्षा में प्रस्तुत करें।

द्विमितीय कला

तैलचित्र/चारकोल/अक्रेलिक/ पेंसिल क्रेयान से निकाले गए चित्र काँच पर निकाले हुए चित्र, फोटो, पोस्टर, व्यंग्यचित्र, मेहंदी, रंगोली, जलरंगों का इस्तेमाल किए हुए चित्र।

इलेक्ट्रॉनिक कला

संगणक द्वारा बनाए गए चित्र, व्हिडियो, फोटो, पोस्टर निर्मिति, संगणक के प्रयोग से व्यंग्यचित्र।

त्रिमितीय कला

शिल्पकला, लकड़ी पर कुरेदा चित्र, कागज से बनी वस्तुएँ, प्राणी की प्रतिकृति तैयार करना, रंगमंच व्यवस्था, कढ़ाई, बुनाई और सिलाई काम ।

९. दृश्य कला के पाँच मूल तत्व :

कोई भी दृश्य कला द्विमितीय अथवा त्रिमितीय, एक अथवा अनेक मूलभूत घटकों से बनी हुई होती है। किसी भी दृश्य कला में इन पाँच मूलभूत तत्वों को देखा जाता है। तैयार बने कलाविष्कार का सौंदर्य, कलाकार ने इन तत्वों को किस पद्धति से प्रयोग किया है इसपर निर्भर करता है।

रेखाएँ : अलग-अलग हेतु साध्य करने के लिए रेखाओं का उपयोग किया जाता है। उदा. किसी शब्द पर, शब्द समूह पर जोर देने, नक्काशी तैयार करना, आकार निर्माण करने के लिए रेखाओं की विशिष्ट रचना से चित्र में गहराई और दूरी का आभास निर्माण होता है। जैसे क्षितिज रेखा पर एक ही बिंदु से निकलने वाली रेखाएँ, रेल की पटरी।

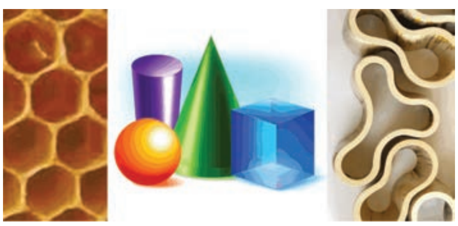

आकार : चित्र के किसी क्षेत्र की निश्चित व्याप्ति याने आकार । दृश्य कला में तीन प्रकार के आकार का प्रयोग किया जाता है। १)भौमितीय आकार(वृत्त, चतुर्भुज, त्रिभुज आदि) २) प्राकृतिक आकार (पत्ते,फूल, मनुष्य आदि)३) अमूर्त आकार (चिह्न, प्रतीक आदि) अलग-अलग आकारों का प्रयोग करके कलाविष्कार में सौंदर्य तथा अर्थ निर्मिति की जाती है।

रंग : रंगों का सही प्रयोग करने से देखने वालों को कलाविष्कार ज्यादा पसंद आता है, उसमें रस निर्मिति होती है। देखने वालों के लिए एक भावनिक चुनौती निर्माण होती है। कुछ विशिष्ट भाग स्पष्ट अधोरेखित होते हैं।

छाया भेद : छायाप्रकाश की अलग-अलग श्रेणियाँ अर्थात छायाभेद। किसी वस्तु पर प्रकाश पड़ने से उस प्रकाश के कम या अधिक होने से छाया का प्रमाण कम या अधिक होता है। इस छायाभेद से किसी वस्तु की घटना की अनुभूति होती है । वास्तववादी चित्र में इस प्रकार के छाया भेद हमें दिखाने पड़ते हैं।

गठन : कोई वस्तु स्पर्श से कैसे महसूस होती है उसे उसका गठन कहते हैं । वस्तु का महीन, खुरदरा और नुकीला आदि प्रकार का गठन होता है।

स्थिर चित्र : प्रमुखतः निर्जीव वस्तु के बनाए गए चित्र को स्थिर चित्र कहा जाता है। अलग-अलग स्थिर चित्रों में उपर्युक्त पाँच तत्वों को कैसे प्रयोग किया जाता है, इसका निरीक्षण कीजिए।

स्मरण चित्र : अपने अनुभव के तौर पर निकाले गए चित्र, प्रसंग, दृश्य को स्मरण चित्र कहा जाता है। अलग-अलग स्मरण चित्रों में उपर्युक्त पाँच तत्वों का कैसे प्रयोग किया जाता है, इसका निरीक्षण कीजिए।

विद्‌यार्थियों को एक स्थिरचित्र और एक स्मरण चित्र निकालने के लिए कहें।

११.आओ सीखें।

अक्षर लेखन : देवनागरी व रोमन लिपि के सभी अक्षर गोल, वृत्तखंड, त्रिभुज, चतुर्भुज, सीधी रेखा पर आधारित हैं। अक्षर लेखन के आवश्यक उपकरण :

(१) ब्रश(तूलिका) (२) कट्‌निब्ज
(३) नरकट की कलम (४) स्केचपेन
(५) कट्‌स्केच पेन (६) मार्कर्स
(७) फ्लैट ब्रश (तूलिका) आदि।

अलग-अलग प्रकार के उपकरणों के प्रयोग से अक्षर में किस प्रकार बदलाव आता है, यह देखें।

१) ब्रश(तूलिका)

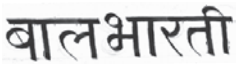

२) कट्निब्ज

३) नरकट की कलम

४) स्केचपेन

५) कट्स्केच पेन

६) मार्कर्स

७) फ्लैट ब्रश (तूलिका)

अक्षर लेखन का अभ्यास कीजिए।

भौमितिक नक्काशी – व्यावहारिक भूमिति

व्यावहारिक भूमिती (Plane Practical Geometry)

विद्यालय के पाठ्यक्रम में गणित विभाग में भूमिति की रचनाओं का उपयोग होता है । उसी प्रकार संकल्प चित्र में भी अलग-अलग रचनाएँ, बाह्य आकार उसी प्रकार अनुपात रेखाटन के लिए भौमितिक रचनाओं का प्रयोग किया जाता है। संकल्प चित्र में भी विविध रचनाएँ बाह्य आकार और अनुपातयुक्त रेखाटन तथा नापतौल की बारीकियाँ निर्माण की जा सकती हैं।

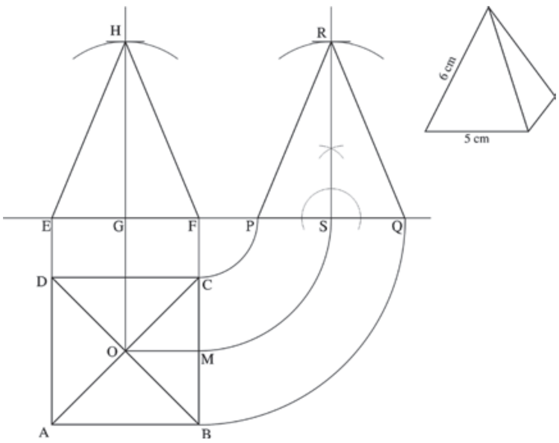

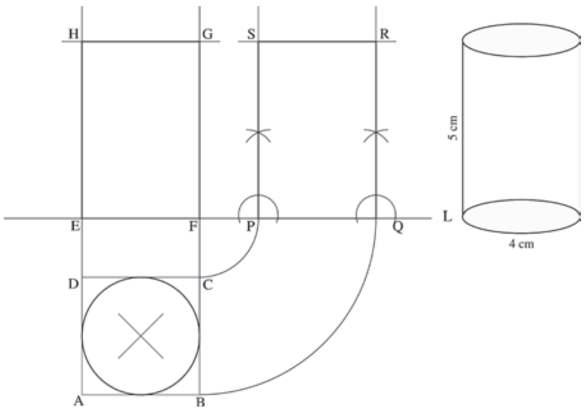

गणित के पाठ्यपुस्तक का आधार लेते हुए अलग-अलग भौमितिक रचना का निर्माण कैसे कर सकते है। उसी प्रकार अलग-अलग भौमितिक आकार अपने आसपास कहाँ दिखाई देते है इस बारे में चर्चा कीजिए। अपने आसपास की जानकारी के लिए QR Code का उपयोग करें।

१२. अभिव्यक्ति की विविधता

निम्नांकित अलग-अलग चित्रकारों के चित्र देखिए। हर एक चित्र में चित्रकार ने सूर्योदय दिखाने का प्रयास किया है। लेकिन हर एक चित्र दूसरे से भिन्न है। इसमें कुछ गलत अथवा सही नहीं है। प्रत्येक चित्रकार की अभिव्यक्ति बहुत ही व्यक्तिगत होती है और उस कलाकार के लिए अर्थपूर्ण होती है। **अब हर एक अपनी कल्पना के अनुसार मनचाहे विषय पर अपनी रुचि के माध्यम का प्रयोग कर चित्र बनाए।** एक-दूसरे का चित्र देखें । चित्र के बारे में वह अच्छा है या बूरा ऐसा न सोचकर व्यक्तिगत अभिव्यक्ति के रूप में समझ लें।

१३. कला का रसास्वाद :

दैनिक जीवन का एक उदाहरण लेते हैं । कोई भी खाद्य पदार्थ बनाते समय उस में काफी सारी चीजें मिलानी पड़ती हैं। लेकिन उस पदार्थ का अंतिम स्वाद कैसा होगा, यह अपनी माँ/पिता जी/होटेल का रसोइयाँ इनमें से किसने खाना बनाया है, उसपर निर्भर करता है। यदि हर कोई वही पदार्थ बना रहा है, तो भी सामग्री का प्रयोग और रसोई बनाने की पद्धति अलग-अलग होने के कारण अंत में पदार्थ का स्वाद, रंग और रूप अलग हो जाता है।

उसी प्रकार दृश्य कला में भी कलाकार पाँच मूलभूत तत्वों का कम-अधिक मात्रा में समावेश कर कलाविष्कार करता है। उन मूलभूत तत्वों को कैसे इस्तेमाल किया है और उससे कलाविष्कारों का सौंदर्य कैसे बढ़ाया है यह समझना अर्थात कला का रसास्वाद लेना है।

१४. कुछ विश्व विख्यात कलाकार

दुनिया में बहुत से महान कलाकार हो चुके हैं। उनमें से कुछ कलाकारों का संक्षिप्त परिचय देखते हैं।

राजा रवि वर्मा (१८४८-१९०६) :

राजा रवि वर्मा एक प्रसिद्ध भारतीय चित्रकार थे। केरल क्षेत्र में उनका जन्म हुआ था। हिंदू देवी-देवताओं तथा पौराणिक घटनाओं के चित्र बनाने में वे प्रसिद्ध थे। यूरोपीय शैली और भारतीय संवेदना का सुंदर मेल उनके चित्रों में देखने को मिलता है।

विन्सेंट व्हैन गॉग (१८५३-१८९०) :

ये एक डच चित्रकार थे । गाढ़े रंग, नाट्यमय/आँखों में भरने वाले सजीव लगने वाले, तूलिका से बनाई चपल रंगछटाएँ, यह उनके चित्र की विशेषताएँ थी। पासवाले चित्र में यह सभी विशेषताएँ दिखाई देती हैं।

पाब्लो पिकासो (१८८१-१९७३) :

पिकासो यह एक स्पैनिश चित्रकार और शिल्पकार थे। २०वीं सदी के सबसे महत्त्वपूर्ण चित्रकार माने जाते हैं। उन्होंने अपनी एक शैली निर्माण की जिसे 'क्युबिझम' कहा जाता है। उनके चित्रों में व्यक्ति तथा वस्तुओं के रेखाचित्रों के टुकड़े करके उसकी पुर्नरचना कर अमूर्त आकार तैयार किए हुए दिखाई देते हैं।

जॉर्जिया ओ' कीफ (१८८७-१९८६) :

यह अमेरिकन चित्रकार थीं । २० वीं सदी की महत्त्वपूर्ण चित्रकार मानी जाती हैं। वे उनकी नवीनतापूर्ण कलाकृतियों के लिए प्रसिद्ध हैं। उनके चित्र के सुस्पष्ट फूल, नाट्यमय इमारतें, आँखों में भरने वाला भूप्रदेश और रेगिस्तान काफी प्रसिद्ध हैं ।

जेमिनी रॉय : (१८८७-१९७२)

यह एक भारतीय चित्रकार थे। १९५५ में भारत सरकार ने उनको पद्मविभूषण पुरस्कार देकर गौरवान्वित किया। गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर जी के सबसे प्रसिद्ध शिष्य थे । उनकी कल्पना और नवनिर्मिति का भारत की आधुनिक चित्रकला को विकसित करने में सबसे बड़ा योगदान है।

अमृता शेरगील : (१९१३-१९४१)

भारत में हुए सर्वाधिक प्रतिभावान चित्रकारों में से एक थीं। अपने २८ वर्ष के छोटे से कार्यकाल में भारतीय चित्रकला क्षेत्र पर अपनी एक अमिट छाप छोड़ी। उनके चित्रों में हमें भारतीय और पाश्चात्य शैली का एक अनोखा मिलाप दिखाई देता है। अतः उनके चित्र भारतीय मिट्टी के होने के बावजूद भी अलग दिखाई देते हैं।

के. जी. सुब्रमण्यम : (१९२४-२०१६)

ये एक भारतीय चित्रकार थे। भारत सरकार ने २०१२ में पद्मविभूषण पुरस्कार से गौरवान्वित किया । वह एक बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। चित्रकार, शिक्षक, कथाकार, कवि, वस्त्ररचनाकार, ऐसी अलग-अलग भूमिकाएँ निभाईं। परंपराओं को ललकार कर पुरानी कल्पनाओं का विरोध करने की ओर उनका अधिक झुकाव था ।

आबालाल रहमान :

आबालाल रहमान एक द्रष्टा और प्रतिभावान चित्रकार थे। कोल्हापुर के कासार गली में उनका जन्म (१८५६ से १८६० के बीच) हुआ। उनके चित्र समूह को १८८८ में व्हाईस रॉय का सुवर्णपदक प्राप्त हुआ। राजर्षि शाहू महाराज ने आबालाल जी के चित्र देखें और अपने दरबार में चित्रकार के रूप में उनकी नियुक्ति की । जलरंग पर उनका प्रभुत्व था । राजदरबार में उन्होंने अनेक विषयों पर चित्र बनाए। प्राणी, पंछी, शिकार दृश्य पोर्ट्रेट, रथों से निकलने वाले जूलूस आदि चित्रों में उनकी प्रतिभा दिखाई देती है।
प्राकृतिक चित्र, पेंसिल स्केच, शेडिंग्ज, फिंगर पेंटिग, ऐसे विविध तंत्र पद्धतियों का इस्तेमाल कर उन्होंने चित्रनिर्मिति की।

शिल्पकार-रावबहाद्दुर गणपतराव म्हात्रे (१८७६-१९४७)

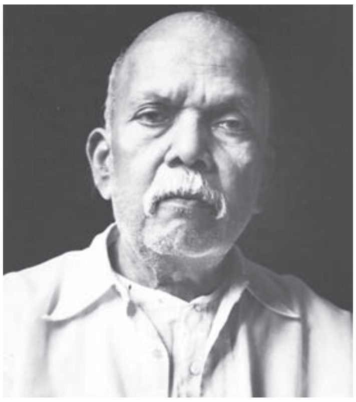

रावबहाद्दुर गणपतराव म्हात्रे(१८७६ से १९४७) आधुनिक काल के प्रसिद्ध महाराष्ट्रीय शिल्पकार सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट में दाखिल हुए। उनकी सुप्रसिद्ध कृति 'मंदिर पथ गामिनी' काफी मशहूर हुई। मंदिर की ओर जाने वाली स्त्री का पहनावा बिलकुल महाराष्ट्रीयन होकर ब्रिटिश कला के प्रभाव से पूर्णतः मुक्त है। उसने पहनी हुई नौ गज साड़ी की चुनटों से उसका शरीर सौष्ठव व्यक्त होता है। उसकी केशरचना, एक पाँव पर जोर देकर एड़ी थोड़ी-सी उठाकर मुड़ा हुआ पैर, उसमें से मंदिर की ओर जाने का आविर्भाव यह बहुत ही लालित्यपूर्ण है। इसके अलावा उसके हाथ, उँगलियाँ, तराशा चेहरा, नाजुक पैर आदि का शिल्पांकन बहुत ही कुशलतापूर्वक किया है।

उन्होंने शिल्प निर्मिति के लिए अलग-अलग माध्यमों का प्रयोग किया लेकिन संगमरमर पत्थर के उनके शिल्प सर्वोत्कृष्ट माने जाते हैं। आधुनिक भारतीय शिल्पकला के इतिहास में उनका स्थान असाधारण है। वे पश्चिमी वास्तववादी पद्धति को आत्मसात करके उसको स्वयं की खास शैली के आविष्कार करने वाले एक आधुनिक शिल्पकार थे।

उपर्युक्त में से किसी भी एक कलाकार को चुनकर उनके जितने संभव हैं उतने चित्र देखें। उनके चित्र में चित्रकला के मूलभूत तत्वों का किस प्रकार इस्तेमाल किया है, इसका निरीक्षण कीजिए।

१५. कुछ भारतीय लोककलाएँ :

लोककला अर्थात लोगों की कला। प्राचीन भारतीय चित्रकला और कला शैली एक पीढ़ी-से-दूसरी पीढ़ी की ओर सौंपी जाती हैं। अभी भी देश के अलग-अलग भागों में उनका अस्तित्व दिखाई देता है। पुराने जमाने में चित्र बनाने के लिए मिट्टी, कीचड़, पत्ते और कोयले का इस्तेमाल करके प्राकृतिक रंग निर्माण किए जाते थे। इन रंगों का इस्तेमाल करके चमड़े अथवा कपड़े पर चित्र बनाए जाते थे। ऐसी ही कुछ विशिष्ट लोककलाओं के बारे में यहाँ हम जानकारी लेंगे।

मधुबनी :

इस कला को मिथिला चित्रकला शैली भी कहा जाता है। क्योंकि इसका प्रारंभ(जन्म)जनक राजा के (रामायण की सीता के पिता)मिथिला राज्य में हुआ। मुख्यतः महिलाएँ यह चित्र बनाती हैं। इसमें ज्यादातर भौमितिक आकारों का उपयोग किया जाता है। यह कला प्रकार अन्य लोगों को ज्यादा मालूम नहीं था । लेकिन १९३० में ब्रिटिशों को भूकंपग्रस्त घरों में कुछ मधुबनी चित्र प्राप्त हुए। उसके बाद इसे प्रसिद्धि मिली। काफी चित्रों में देवी-देवता, फल, फूल और प्राणियों के चित्र दिखाई देते हैं।

वारली :

इस शैली का उद्‌गम पश्चिम घाटी की वारली जनजाति में ई.स पूर्व २५०० में हुआ। इसमें प्रमुखतः वृत्त, त्रिभुज, अलग-अलग प्रकार के आकार, मानवीय आकृति, मच्छीमारी, शिकार करने वाले, पर्व-उत्सव, नृत्य आदि दैनिक जीवन के चित्र चित्रित किए जाते हैं। चित्रों की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता है मानवीय चित्राकृति। इसमें एक गोलाकार और दो त्रिभुज का प्रयोग कर मानवीय आकृति बनाई जाती है। वारली चित्रकला गहरे लाल या किसी भी गहरे रंग की पृष्ठभूमि पर सफेद रंग से चित्रित की जाती है।

गोंड : मध्यप्रदेश के गोंड जनजाति के दैनंदिन जीवन में होने वाले प्रकृति महत्त्व गोंड शैली चित्रों में दिखाई देता है। ठोस तथा आकर्षक पद्‌धति की रंग-संगति वाली उस शैली के चित्रों में फल,फूल, पेड़ और प्राणी इनका प्रमुखतः चित्रण किया जाता है। इन चित्रों के रंग कोयला, गोबर, पेड़ के पत्ते और रंगीन मिट्टी से बनाए जाते हैं। नजदीक से देखने पर यह सभी चित्र बिंदु तथा रेखाओं से बने हुए दिखाई देते हैं। आजकल इस शैली की नकल काफी जगह अक्रेलिक के रंगों का प्रयोग करके, की हुई दिखाई देती है।

तंजौर :

तंजौर अथवा तंजावूर इस चित्र शैली का उदय ई.स. १६०० में तंजावर में हुआ। इस चित्रशैली में सोने के पत्तर(वर्क) का प्रयोग करने की पद्‌धति है। इससे चित्रों में जगमगाहट आती है। लकड़ी पर बनाए इस शैली के चित्रों का प्रमुख विषय देवी-देवताओं के प्रति होने वाला भक्तिभाव है। इस शैली में मराठा, दक्खनी, यूरोपीय शैली का अनोखा मेल दिखाई देता है।

कलमकारी :

कलमकारी का शब्दशः अर्थ है कलम से बनाया गया चित्र। आजकल यह शैली साड़ी तथा अन्य पारंपरिक वस्त्रों पर प्रयोग की हुई दिखाई देती है। इसमें भी प्राणी, पंछी, पत्ते, फूल तथा रामायण, महाभारत के प्रसंगों के चित्र दिखाई देते हैं ।

१६. भारतीय कढ़ाई के कुछ लोकप्रिय प्रकार

फुल्कारी

चिकनकारी

जरदोसी

कशीदाकारी

राजस्थानी पैचवर्क

१७. कलाकारों के साथ संवाद :

- आपके घर अथवा विद्‍यालय के पास रहने वाला कोई एक कलाकार व्यक्ति निश्चित करें। चित्रकला, शिल्पकला मिट्‍टीकाम आदि में से कोई भी दृश्यकला के साथ संबंधित व्यक्ति हो सकता है।
- गुट के साथ मिलकर प्रश्नों की सूची तैयार करें और कलाकार के नाते उनकी अभी तक की यात्रा के संबंध में संवाद करें ।
- इस संबंध में एक रिर्पोट तैयार करें। अगर संभव है तो उनके साथ साक्षात्कार लिए हुए कलाकार के कामों के कुछ फोटो जोड़ दें।
- उक्त कलाकार ने अपने काम से कुछ अलग शैली का निर्माण किया है क्या ? इस बात को ढूँढ़े। दृश्यकला के मूलभूत तत्वों का प्रयोग, वे अपनी कला में कैसे करते हैं, इस बात पर चर्चा करें।

१८. कला का मानवीय जीवन में महत्त्व :

प्रारंभ में की हुई चर्चा के अनुसार अभिव्यक्ति हर मनुष्य की जरूरत होती है। आज के युग में नवयुवाओं के जीवन में अभिव्यक्त होने के मौके और निश्चित मंच की नितांत आवश्यकता है। खुद के विचार, भावनाएँ, मत, अनुभव दूसरों तक पहुँचाना, कल्पना करना उसी प्रकार इतिहास के संदर्भ जानकर अपने आसपास घटित होने वाले प्रसंगों का अर्थ लगाना इन सभी बातों के लिए कला एक महत्वपूर्ण माध्यम माना जाता है। कलाओं का महत्व बताने वाले कुछ कारण नीचे दिए हैं ।

मस्तिष्क अनुसंधान से ऐसा साबित हुआ है कि कला के कारण प्रश्न हल करने, विश्लेषण करने के कौशल का विकास होता है और उससे विद्यालय स्तर पर प्रगति होती ही है साथ ही नौकरी और व्यवसाय के कौशल भी विकसित होते हैं।

कला के कारण अपना बौद्धिक विकास होता है। अपनी सर्जनशीलता, सौंदर्यदृष्टि की वृद्धि होती है और अपनी कल्पना शक्ति का विकास करने का मौका मिलता है ।

जितना हम अन्य लोगों की कला के साथ जुड़ जाएँगे उतना ही उनका इतिहास, संस्कृति, श्रद्धा और विचार पद्धति से जुड़ पाएँगे। इसकी वजह से हमारे मन में उनके प्रति आदर और अपनेपन की भावना निर्माण होगी तथा अपनी सहिष्णुता बढ़ेगी।

मूल्यांकन

भारांश १०%				
कसौटी	**उत्तम (बहुत अच्छा)**	**योग्य (संतोषजनक)**	**अयोग्य (असंतोषजनक)**	**अंक**
उपक्रम में सहभाग	सभी स्वाध्याय कृतिशील होकर उत्साह से पूरे किए। प्रकरण और पुस्तक की सभी कृतियाँ पूरी कीं।	सभी कृतियाँ पूर्ण की।	दूसरे का देखकर उत्तर लिखे हैं।	
कलाविष्कार में कल्पकता दिखाई देती है।	विद्यार्थियों के किए हुए कलाविष्कार में कल्पकता दिखाई देती है।	सीमित कल्पकता दिखाई देती है।	किसी भी प्रकार की कल्पकता दिखाई नहीं देती है। दूसरे का देखकर काम किया।	
कलाकार से साक्षात्कार	पाठ में निर्देशित संकल्पनाओं के संदर्भ में कलाकार का साक्षात्कार लिया और कलाकार से प्रमाण या पत्र वापस लाए।	साक्षात्कार का पाठ के आशय से कोई संदर्भ नहीं था । प्रमाण अथवा पत्र नहीं लाए।	साक्षात्कार लिया नहीं।	

क्या हुआ समीना ?तुम चिंतीत लग रही हो ?
याद करो, तुमने ही मुझे किशोरावस्था के मस्तिष्क के बारे में बताया था ना? अब मैं खतरा निर्माण होने वाले सभी व्यवहार टालने का प्रयास करूँगी। लेकिन अभी भी मेरे कुछ दोस्त-सहेलियों को कुछ समझ में नहीं आ रहा है। यह बात मुझे काफी तकलीफ दे रही है। इससे संघर्ष निर्माण हो रहे हैं।
आप मित्रों के साथ हुए संघर्षों को किस प्रकार हल करते हैं? क्या बुरे बर्ताव वाले अन्य लोगों के जैसे ही आप आपस में भी एक-दूसरे को घूसा मारते हैं?
नहीं, हम बड़े बच्चों की तरह आपस में कॉफी पीते-पीते बातचीत के माध्यम से संघर्ष को हल करते हैं।
समीना बिलकुल आसान है। तुम्हें सिर्फ संघर्षों को मिटाने के कुछ तंत्र आत्मसात करने होंगे।